Dr Tapali Mukerji
Date –
Associate Professor
Music Deptt.
Rohtas Mahila College
Sasaram

Study material for B.A Part I Hons Paper 1st Theory
Topic – Notes (1) Nayaki, Gayaki
(2) Vadhi, Samvadhi, Anuvadhi

Nayaki – नायकी का अर्थ गुरुमुख से सीखी हुई विद्या को गुरु की अनुरूप प्रस्तुत करना अर्थात् गुरु से तालीम लिए हुए बंदिश, राग आदि गुरु से सीखकर अविकल गुरु की अनुरूप प्रस्तुत करना ही नायकी कहा जाता है। नायकी के ऊपर ही किसी कलाकार की गायकी निर्भर करता है। नायकी गुरु द्वारा बताया या सीखाया हुआ गायन है।

Gayaki (गायकी) अपनी गुरु से सीखी हुई संगीत विद्या के आधार पर शिष्य अपनी प्रतिभा, योग्यता अनुभव तथा विभिन्न कल्पनाओं द्वारा रागों के आलाप विभिन्न सरगम, स्वर बाँट तान एवं तान आदि से युक्त जो गायन या वादन प्रस्तुत करते हैं. उसे गायकी कहा जाता है। नायकी के ऊपर कलाकार की गायकी निर्भर करती है। इसलिए पुराने समय में शिष्यों वर्षों अपने गुरु के पास रह कर राग, ताल आदि का गंभीर अध्ययन करता था तत्पश्चात् वह अपनी प्रतिभा तथा गुरु से प्राप्त तालीम पर अपनी गायकी प्रस्तुत करता था।

नायकी तथा गायकी दोनो का ही संगीत जगत में अपनी महत्ता है, यदि नायकी नीव है तो गायकी उस नीव पर प्रस्तुत महल है,

गुरु द्वारा सीखाया हुआ सही निर्देशन नायकी गायकी में सुन्दरता लाने के लिए एक गुरु अपने शिष्य में अभ्यास या रियाज की प्रवृत्ति का विकास करता है, जिसे स्वरों में सहजता माधुर्य प्रवाह की

Scanned with CamScanner

वृद्धि हो सके।
केवल मात्र कुलदीप आचार्य या जो इसी तरह
[redacted] सुरक्षा को करना चाहते हैं उनका राग
अधूरा रह जाता है। एक कलाकार के अंदर
अंदर गायकी तथा गायकी दोनो गुण होना आवश्यक
है।

(2) Vadhi वादी स्वर राग में एक ऐसा स्वर होता है जिसका
प्रयोग राग में अन्य स्वरों से अधिक या बार-बार
होता है जिससे राग रूप से माधुर्य या कलात्मक
होता है जिसमें राग रूप से मापुर्य कराने की राग रूपी
[redacted] है, आता है। राग से ऐसे स्वर को राग रूपी
शब्द का राजा या वादी स्वर कहा जाता है।
बहुत से ऐसे राग हैं जिसका स्वरूप एक सा
होता है लेकिन वादी स्वर अलग होने के
कारण एक दूसरे से पृथक तथा स्पष्ट हो
जाते हैं। वादी स्वर को राग का अंश स्वर,
जीव स्वर, प्रधान स्वर तथा राग का राजा
भी कहा जाता है। जैसे रागमालि
का किन नाम से जाना जाता है, जिसके कारण राग
में पंचम स्वर वादी है, जिसके कारण राग
में पंचम स्वर को महत्वपूर्ण है।
वादी स्वर को उपमा राजा से दी जाती है, जिस प्रकार
राजा है जिस प्रकार किसी राज्य में राजा
सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है उसी प्रकार
राग में वादी स्वर का महत्व है।

Samvadhi जो स्वर राग में वादी स्वर की
अपेक्षा में कम तथा अन्य स्वरों से अधिक प्रयोग
किया जाता है उसे सम्वादी स्वर कहा जाता
है। इसलिए कहा जाता है कि यदि राग रूपी

राग में वादी स्वर राजा है तो सम्वादी स्वर मन्त्री होगा। क्योंकि राग में राजा के बाद मन्त्री का स्थान है।

कहा जाता है वादी तथा सम्वादी स्वरों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। वादी तथा सम्वादी स्वर में षड्ज-पंचम भाव रहता है या षड्ज मध्यम भाव। इसका अर्थ यह कि षड्ज-पंचम सा-प, रे-ध, ग-नि; मध्यम तथा षड्ज-मध्यम भाव में — सा-म रे-प, ग-ध, म-नि अर्थात् इन जोड़ियों के अनुसार ही वादी-सम्वादी स्वर चुना जाता है।

(3) Anuvadhi — वादी तथा सम्वादी स्वरों को छोड़कर बाकी प्रयोग होने वाले स्वरों को अनुवादी स्वर कहा जाता है। अनुवादी स्वर की उपमा दी गई अनुचरों अथवा सेवकों की उपमा दी गई है, जिस प्रकार केवल राजा और मन्त्री से किसी राज्य नहीं परिचालन हो सकता। ~~उसी प्रकार~~ उसी प्रकार रागों में वादी-सम्वादी के साथ अनुवादी स्वरों का अपना एक महत्व है।